**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# गांधी : चिंतक नही राजनीतिज्ञ

सुनीता अवस्थी, हिन्दी विभाग,
शासकीय के. राजकीय सनातन धर्म महाविद्यालय, ब्यावर अजमेर, राजस्थान, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

Corresponding Author :
सुनीता अवस्थी, हिन्दी विभाग,
शासकीय के. राजकीय सनातन धर्म महाविद्यालय,
ब्यावर अजमेर, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/03/2020
Revised on : -----
Accepted on : 13/03/2020
Plagiarism : 00% on 07/03/2020

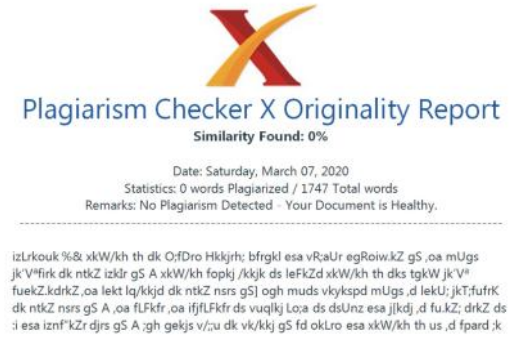
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Saturday, March 07, 2020
Statistics: 0 words Plagiarized / 1747 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

izLrkouk %& xkW/kh th dk O;fDro Hkkjrh; bfrgkl esa vR;aUr egRoiw.kZ gS ,oa mUgs jk'V*firk dk ntkZ izkIr gS A xkW/kh fopkj /kkjk ds leFkZd xkW/kh th dks tgkW jk'V* fuekZ.kdrkZ ,oa lekt lq/kkjd dk ntkZ nsrs gS] ogh muds vkykspd mUgs ,d lekU; jkT;fufrK dk ntkZ nsrs gS A ,oa fLFkfr ,oa ifjfLFkfr ds vuqlkj Lo;a ds dsUnz esa jkdj ,d fu.kZ; drkZ ds :i esa iznf'kZr djrs gS A ;gh gekjs v/;;u dk vk/kkj gS fd okLro esa xkW/kh th us ,d fpard ;k

## प्रस्तावना :–

गांधी जी का व्यक्तिव भारतीय इतिहास में अत्यंन्त महत्वपूर्ण हैं एवं उन्हे राष्ट्रपिता का दर्जा प्राप्त हैं। गांधी विचार धारा के समर्थक गांधी जी को जहॉ राष्ट्र निर्माणकर्ता एवं समाज सुधारक का दर्जा देते है, वही उनके आलोचक उन्हे एक समान्य राज्यनितिज्ञ का दर्जा देते है, एवं स्थिति एवं परिस्थिति के अनुसार स्वयं के केन्द्र में रखकर एक निर्णय कर्ता के रूप में प्रदर्शित करते हैं। यही हमारे अध्ययन का आधार है कि वास्तव में गॉधी जी ने एक चिंतक या एक राजनितिज्ञ की भूमिका भारत के निर्माण में निभायी हैं ।

## मुख्य शब्द :–

नरम दल, गरम दल, असहयोग आन्दोलन, रोलक्ट एक्ट, कांग्रेस दल ।

गांधी का प्रादुर्भाव भारतीय राजनीति में 1919 से प्रारम्भ हुआ। उन्हें उससे पूर्व भी और उसके बाद भी कभी चिंतक, या वैचारिक लेखक के रूप में नही जाना गया। हरिजन, आदि अखबारों में उनके संपादकीय और लेखों का बाद में संकलन किताबो के रूप में आए। वह ऐसे राजनेता के रूप में सामने आते है जो देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना चाहते थे ,वह भी बिना खून खराबे के। आम हिंदुस्तानी वेसे ही परेशान, लाचार, सहमा हुआ था, उन जैसे लाखो हिंदुस्तानियों का खून बहकर भी आजादी नही मिलती। यह वह चतुर गुजराती अच्छी तरह जानते थे। इसी बात से उनके सुभाष चन्द्र बोस से मतभेद थे। जो तथाकथित युद्ध के रास्ते स्वतंत्रता चाहते थे, और विश्व बिरादरी से अंग्रेजी राज के खिलाफ समर्थन जुटा रहे थे। (नेताजी, द

फॉर्गोटन हीरो, श्याम बेनेगल )। वास्तव में गांधी जी नरम दल,गरम दल और प्रगतिशील यह तीनो विचारधारा देश मे, कांग्रेस में देख रहे थे। इसके अतिरिक्त मुस्लिम लीग भी थी। (बिपिन चन्द्र, Indian freedom struggle, page 123)। उन्होंने यह देख लिया था कि ब्रितानिया फौज को युद्ध मे हराना मुश्किल है। उन्होंने अपनी राह और बिचारधारा चुनी और बनाई वह बौद्ध दर्शन के मार्ग, अहिंसा से जुड़ी हुई थी। उसमे उन्होंने सत्य, सर्वोदय और ग्राम स्वराज को महत्व दिया, और अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन 1919 में प्रारम्भ किया। भारतीय राजनीति में 1919 का विशेष महत्व हैं। इसलिए ही नही की गांधी जी ने पहला असहयोग आंदोलन प्रारम्भ किया बल्कि इसलिए भी की अंग्रेज हुक्मरान ने और सख्त कानून बनाए, 1919 भारत सरकार अधिनयम, जो रोलेट एक्ट का परिणाम था। जिसके विरोध में जलियांवाला में सभा कर रहे हजारो निर्दोष हिंदुस्तानियों को जरनल डायर ने गोलियों से भून डाला।'(इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल, ई.विंस्टन)

यह अभी तक स्पष्ठ नही है कि उन किसानों की विरोध सभा का आयोजन किसने किया था और किस नेता को सुनने के लिए हजारो किसान एकत्रित हुए थे।

गांधी जी ने यह सब प्रयोग, यदि आप नही जानते हो, तो करीब 1889 में यानी 30 वर्ष पूर्व, यही सब असहयोग, सत्याग्रह आंदोलन प्रिटोरिया, डरबन दक्षिण अफ्रीका में सफकतापूर्वक इन्ही अग्रेजो के खिलाफ सफलतापूर्वक कर चुके थे। तो जब वह भारत आए और बैरिस्टरी प्रारम्भ की, यह अलग दिलचस्प बिंदु है कि वह विदेश से अंग्रेजी माध्यम से लॉ पढ़े हुए सुलझे हुए इंसान थे। तो जब वह भारत आए।तब अपने साथ वह एक कामयाब मुहिम दक्षिण अफ्रीका में चला चुके व्यक्ति के रूप में आए। फिर भी उन्होंने भारतीय जनमानस, यहां की अंग्रेजी शासन व्यवस्था और भारतीय नेताओं के विरोध को बारीकी से देखा, समझा। उन्हें समझ आ गया कि इन छोटे छोटे और असंगठित आंदोलनों के अंग्रेजी हुकूमत पर कोई असर नही होने का। इसके लिए ऐसा आंदोलन हो कि देश का हर वर्ग उठ खड़ा हो, अपने से जुड़ाव महसूस करे। और आजदी की लड़ाई में कंधे से कंधा जुड़े। यही गांधी की सोच थी, जिसे उस वक्त के कई कांग्रेसी नेताओं आदि ने विरोध के बाद भी स्वीकार किया।जब जनमानस पर उसका जबरदस्त असर देखा, तो वह जुड़ते चले गए।

प्रभाव .....गांधी ने भी अपना राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले को बताया। तिलक से भी वह प्रभावित रहे। इसके अलावा गीता उनके विचारों की प्रेरणा स्रोत रही। रस्किन, थोरो, टॉलस्टॉय आदि का भी उन पर प्रभाव रहा। चूंकि उनका मुख्य उद्देश्य देश की आजादी था, अतएव उन्होंने कोई व्यवस्तिथ ढंग से विचारों और लेखन को संकलित भी नही किया। और यह भी दिलचस्प है कि गांधी का विरोध उनके समय ही प्रारम्भ हो गया था। (राजनीति विज्ञान के विभिन वाद,पेज262,डॉ जैन), दरअसल कुछ लोग जल्दी में थे, और हिंसात्मक, युद्ध से आजादी के पक्षधर थे। इनमें तिलक, गोखले, सुभाष और मुस्लिम लीग, अली बन्धु आदि आते हैं।

पर उस समय तक विश्व मे फ्रांस, अमेरिका, तथा रूस में हिंसात्मक क्रांतियां हो चुकी थी और उसके परिणाम भी सामने आए थे। उस एकमात्र रास्ते से हटकर गांधी ने अहिंसात्मक आंदोलन का रास्ता दिया। जो हालांकि नया नही था बौद्ध, जैन धर्म मे भी था। और उससे भी हजारो वर्ष पहले वैदिक संस्कृति में भी है। परन्तु उसका जनमानस में जिस तरह का अनूठा प्रयोग महात्मा ने किया, उसने पूरे विश्व को एक नया और सशक्त माध्यम दिया विरोध का। बाद में इसी का उपयोग नेल्सन मंडेला ने किया। इसमे अनेक अच्छाइयों को हम देख सकतें हैं। परन्तु सबसे अच्छी बात थी धर्म और नैतिकता का राजनीति में समन्वय, संतुलन। और यही चीज जुड़ाव बनी आजादी के असहयोग आंदोलनों में लाखो लोगो की भागीदारी की।

## गांधी की सोच :

यहां कुछ उद्धरणों से मैं स्पष्ठ करूंगी की गांधी यह जानते थे, कि कांग्रेस और तत्कालीन अधिकांश नेता सत्ता की आहट पाते ही गांधी विचारधारा को अनुपयोगी और गांधी को अप्रासंगिक मानने लगे थे, और

वास्तव में उन्होंने गांधी के विचारों को क्रियान्वित करने में आगे कोई रुचि नही ली। इनमें कांग्रेस सबसे आगे थी। इसी बात को उस साबरमती के वासी ने समझ लिया था। तभी उन्होंने आम जनता की दंगो और आपसी मतभेदों में होती हिंसा के खिलाफ कई बार अपने आंदोलन वापस लिए। चाहे वह 1921 हो या 1931 का कदम। यह कई लोग कहते हैं कि गलत फैसले हैं पर सारे तथ्य स्पष्ठ करते हैं, कि तत्कालीन सत्ता लोलुपो की जल्दबाजी और हिंसा को रोकने के लिए उनकी यह सोची समझी नीति थी। पुणे की यरवदा जेल में गांन्धी लगभग 6 साल कैद रहे। और यह कीमती वर्ष, जब असहयोग आंदोलन और उनकी मुहिम से देश का जन जन जुड़ चुका था ,इस तरह बिल्कुल रीते रीते गए। क्यो? और एक से एक वकीलो वाली कांग्रेस ने उनकी रिहाई के लिए प्रयत्न नही किया? जबकि वह कोई हिंसा के जुर्म में नही थे कैद। ऐसी कई घटनाएं बताती है कि उस दूरदर्शी, देशभक्त, अहिंसक गुजराती का कांग्रेस से और कांग्रेस का उनसे मोहभंग हो चुका था। लेकिन जेल के इन्ही वर्षो ने उनकी अपरिहार्यता और कांग्रेस के लिए मजबूरी सिद्ध की। वह बाहर आए और 1929 से आगे देश की राजनीति में पटेल, जिन्ना, अंबेडकर आदि का बढ़ता प्रादुर्भाव बताता है कि हिंदुस्तान अपने भावी भविष्य की राजनीति तैयार कर रहा था।

इसके अतिरिक्त गांधी की सोच थी कि मशीनों, तकनीक के विकास से बेरोजगारी बढेगी। हमारे ग्रामीण, लघु, कुटीर उद्योग आदि खत्म हो जाएंगे। यहां यह बताना दिलचस्प होगा कि उसी वक्त में देश मे ट्रेनों की पटरियां बिछ रही थी,हवाई जहाज बढ़ रहे थे।अनेक देश क्रांति के बाद बिकास की राह पर थे। इस तकनीक विहीन हिंदुस्तान को कोई भी नही स्वीकारता ।तो कांग्रेस ने भी नही माना। और तकनीक और मशीनों के विकास पर जोर दिया। परन्तु अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के विकास का अन्त्योदय सिंद्धान्त उन्हें एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ सिद्ध करता है। बाद में इसी से अम्बेडकर की राजनीति प्रारम्भ हुई जो आज भी जारी है।

साथ ही राजनीति में चरित्र हनन उस वक्त भी था। कईं वामपंथी लेखक गांधी को नाकाम विजनरी ( लाल बहादुर वर्मा, वागर्थ,जनवरी 19,पेज 71) मानने की भूल करते हैं। जबकि महात्मा गांधी एक सफल विजनरी ही नही बल्कि राजनीतिज्ञों के भी राजनीतिज्ञ थे। प्रमाण है उनके आत्मकथा सत्य के मेरे प्रयोग, जिसमे उन्होंने अपने बचपन से युवा अवस्था की एक एक कमजोरी उजागर करके रखी और बाद में उससे और मजबूत बनकर उभरे। साथ ही ग्राम स्वराज लिखकर उन्होंने यह स्पष्ठ किया कि वह तकनीक, उद्योगों के खिलाफ नही । वह यह चाहते है कि भारतीय जनमानस की सबसे छोटी इकाई ग्राम मजबूत बने, स्वावलम्बी हो हमारे किसान और लघु उद्योग विकसित हो। तकनीक उन क्षेत्रों में आए जहां यह सब नही है। यह वह सोच है जो गांधी को वैश्विक सोच का बनाती हैं। आज यूरोप के कई देशों में स्वदेशी मॉडल पर पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, सब्जी, खाद्यानों की खेती आदि होती है। वहाँ मानव श्रम को मशीनों से ऊपर रखा जाता है। परन्तु बापू के देश मे यदि कोई ग्राम स्वराज की, स्वदेशी की बात करता है तो उसे पिछड़ा हुआ बताया जाता है। हालांकि कई नए स्टार्टअप के द्वारा अनेक युवा इस दूसरे दशक में कृषि, दुग्ध उत्पादन आदि के साथ स्वदेशी की तरफ आए हैं। आश्चर्यजनक ढंग से आज हम देखते है कि गांधी स्वदेशी पर भी सही हैं। पूरा यूरोप और पूर्व एशिया आज अपने अपने देशों में खेती की उन्नत तकनीक, पन बिजली, सौर ऊर्जा, किसानों को प्रोत्साहन दे रहे है। यही स्वदेशी की प्रणाली है, सबका साथ सबका विकास। इसे ही गांधी लागु करना चाहते थे।हिंदुस्तान में भी स्टार्टअप, बैक टू विलेज, और कृषि की नई तकनीक ,बांधो और किसानों को मजबूती पर काम प्रारम्भ हुआ है।

वास्तव में हम गांधी, गांधीवाद, गांधी विचारधारा से कभी अलग नही हो सकते। क्योंकि यह हमारे ही जन जन से और देश के कण कण से ही निर्मित है। फर्क इतना है कि उस पर चलना, उसे समझना और अमल करना आम व्यक्ति, अधीर इंसानों की बात नही। गांधी विचारधारा अपनाने के लिए गांधी न हो परन्तु अपने व्यवहार और जीवन मे उसे उतारना होगा। और इसीलिए पूरे विश्व मे गांधी निर्विवाद रूप से सर्वोच्च राजनेता, व्यक्तित्व है। परन्तु कोई दूसरा गांधी आज 150 वर्षो बाद भी नही हुआ, न होगा।

## निष्कर्ष :–

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि गांधी जी के भारतीय राजनिति मे प्रवेश के पश्चात् उनकी प्रारंभिक भूमिका एक विचारक एवं चितंक की रही है, जो अहिंसा के रास्ते से भारत को स्वतंत्रता दिलाना चाहते थे। तत्कालिन स्थितियों में जहॉ भारतीय राजनीति गरम विचाधारा के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहती थी वहीं गॉधी जी ने अहिंसा पर ही जोर देकर भारतीय राजनितिक आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की। गॉधी जी के अहिंसा वादी विचारधारा ने जनसमान्य को प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आदोलन में सम्मिलित कर लिया जिसकी व्यापकता एवं निरंतरता की देश के स्वतंत्रता का आधार बना। गॉधी जी की अहिंसावादी विचारधारा उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट स्थान प्रदान करता है तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 70 वर्षो में गॉधी जी का स्थान कोई भी नेता या व्यक्ति भारतीय अथवा व्यैश्विक परिदृश्य में प्राप्त करने में सफल नहीं रहा है। निःसंदेह गॉधी जी के आलोचक गॉधी जी के व्यक्तित्व को एक स्वर्थी राजनितिज्ञ के रूप में परिभाषित करते है, लेकिन वे एक महान चिंतक, समाजसुधारक भारतीय मार्गदर्शक है।

## संदर्भ सूची :–

1. *Netaji, the forgotten hero: directed by shyam benegal.*
2. *Pal, Vipin Chander, indian freedom struggle, page 124.*
3. *E-vinston, indian struggle of freedom.*
4. *जैन डॉ. राजनीति विज्ञान के विभिन्न वाद,पृष्ठ 262।*
5. *वर्मा, लालबहादुर,(जनवरी 2019) वागर्थ,पृष्ठ 71।*
6. *गांधी,मोहनदास, सत्य के मेरे प्रयोग, आत्मकथा,गुजरात विद्यापीठ,संस्करण।*
7. *गांधी, मोहनदास करमचंद, हिन्द स्वराज।*

********